सावधानी

# गर्मियों में उपोष्ण फलों के बागों की देखभाल

**नरेश बाबू*** और **तरुण अदक***

ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ हो चुकी है। इस ऋतु में बागों को स्वस्थ रखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। अगर बागों की उचित देखभाल न की गई तो बागों की उत्पादकता अधिक प्रभावित हो सकती है। इनमें होने वाला फलोत्पादन कम होने के साथ उसकी गुणवत्ता भी प्रभावित होगी। इस ऋतु में बागों में की जाने वाली कृषि क्रियाओं पर भी प्रभाव पड़ता है। इन दिनों उपोष्ण फलों जैसे आम, लीची, केला आदि में फल लगने एवं फल बढ़ने की क्रियाएं भी शुरू हो जाती हैं और अमरूद में बहार नियंत्रित करने की प्रक्रिया करनी होती है। ग्रीष्मऋतु में अपने बागों में आवश्यक कृषि क्रियायें अपनाकर उन्हे स्वस्थ बनाये रख सकते हैं तथा उच्च गुणवत्तायुक्त फलोत्पादन ले सकते हैं।

ग्रीष्म ऋतु के महीने फलों के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। इस मौसम में आमतौर पर वातावरण शुष्क हो जाता है जिससे मृदा में पानी की कमी होने लगती है। अत: फलों की उचित वृद्धि के लिए 7-10 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए, जिससे पौधों को निरंतर नमी मिलती रहे। इसके लिए स्थानीय घासफूस की 10-15 सें.मी. मोटाई की मल्चिंग भी कर सकते हैं।

**अप्रैल में उपोष्ण बागों के कार्य**

आम, अमरूद, नीबू, बेर एवं पपीता की आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। आम के गुम्मा रोग (मालफॉरमेशन) से ग्रस्त पुष्प मंजरियों को तोड़कर जला दें या गहरे गड्ढे में दबा दें। जब फलों का आकार मटर के दाने के बराबर हो जाए तो हल्की सिंचाई आरम्भ कर देनी चाहिए। इसके लिए थाले बनाकर 7-10 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करनी चाहिए। आम के फलों को गिरने से बचाने के लिए एल्फा नेफवलीन एसिटिक एसिड 4.5 एल. एल. के 20 मि.ली. को प्रति लीटर पानी/प्लेनोफिक्स; (90 मि.ली./200 ली पानी) में घोलकर छिड़काव करें। यदि आम के बाग में भुनगे का प्रकोप दिखाई दे तो इसके नियंत्रण हेतु क्लोरपाईरीफॉस (2 मि.ली/ली.)/थायोमेथोक्साम (25 प्रतिशत सक्रिय तत्व) 0.3 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करना चाहिए। फलों का आकार मटर के दाने के बराबर होने पर प्रथम पर्णीय छिड़काव 0.5% बोरेक्स/0.2% सोलूबोर/0.2% फॉलीबोर/0.5% सल्फेट ऑफ पोटाश का और अच्छे फलों की प्राप्ति हेतु दूसरा छिड़काव 20 दिनों के अंतराल पर करें। यदि ईंट के भठ्ठे बाग के पास हों या आम के बाग की भूमि बलुई हो तो कोयलिया (नेक्रोसिस) के नियंत्रण हेतु बोरेक्स 1 प्रतिशत (10 ग्रा/लीटर) का छिड़काव माह के अन्तिम सप्ताह में करना चाहिए।

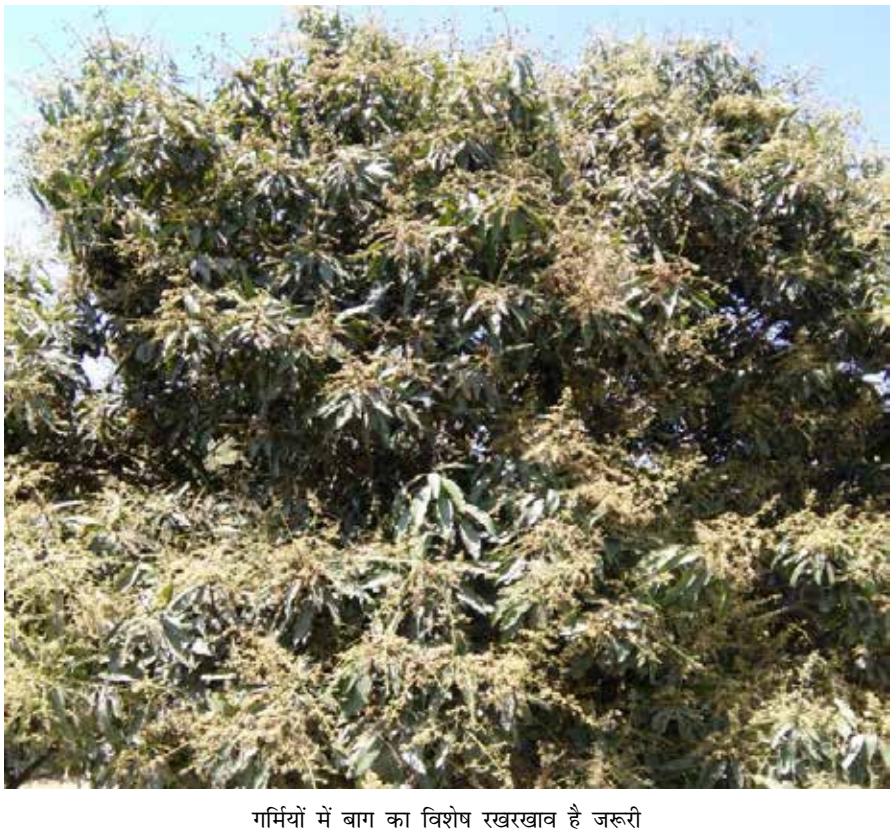

गर्मियों में बाग का विशेष रखरखाव है जरूरी

ब्लॉसम ब्लाइट एन्थ्रेक्नोज का प्रकोप होने पर कार्बेन्डाजिम 1 ग्रा.प्रति 1 ली. पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए। तनाभेदक कीट से प्रभावित नये तनों को काटकर कीट सहित नष्ट कर देना चाहिए। तनाभेदक कीटों और पत्ती काटने वाले कीड़ों के नियंत्रण के लिए क्विनालफॉस 0.05 (2 मि.ली दवा/ली. पानी) का छिड़काव करना चाहिए। फल मक्खी के नियंत्रण हेतु 0.1 प्रतिशत मिथाइल यूजीनाल एवं 0.1 प्रतिशत मैलाथियान के घोल का गंध ट्रैप लगाना चाहिए। लीची के बागों की आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें। लीची में फूलबेधक की रोकथाम हेतु डाईक्लोरोवास आधा मि.ली. प्रति लीटर पानी (0.05 प्रतिशत) में. 2 मि.ली. प्रति 5 लीटर पानी (0.04 प्रतिशत) में घोल बनाकर छिड़काव करें।

आम के बागों में फलों और नई पत्तियों पर थ्रिप्स कीट की उपस्थिति अगर पायी जा

*भाकृअनुप-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, डाकघर-काकोरी, लखनऊ, उ.प्र. (भारत)

फलों की उचित वृद्धि के लिए सिंचाई का बढ़ता महत्व

रही है या इसका प्रकोप है तो किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि प्रभावित बागों में इस कीट के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम (25 प्रतिशत सक्रिय तत्व) 0.3 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें। अमरूद या आम के बागों को लगाने के लिए, खेत की अच्छी प्रकार से तैयारी करें। पौधे लगाने के लिए गड्ढों को 3×3 मी. अमरूद एवं 5×5 मी. आम के लिए गहरा खोदा जाना चाहिए। प्रत्येक गड्ढे में 10 कि.ग्रा. गोबर की सड़ी हुई खाद 1 कि.ग्रा. नीम की खली एंव 50 ग्राम क्लोरपायरीफॉस दवा को ऊपरी मिट्टी के साथ मिलाकर गड्ढों को भर देना चाहिए।

**मई में उपोष्ण बागों के कार्य**

गुम्मा रोग ग्रसित बौर को तोड़ कर निकाल देना चाहिए। फलों को गिरने से रोकने हेतु एन. ए. 20 पी. पी. एन (प्लेनोफिक्स 90 मि.ली प्रति 200 ली.) पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए। फलों के मटर के दाने बराबर होने पर प्रथम 2 पर्णीय छिड़काव 0.5% सल्फेट ऑफ पोटाश का और अच्छे फलों की प्राप्ति हेतु दूसरा छिड़काव 20 दिनों के अंतराल पर करें। फल मक्खी आम के निर्यात को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कीट है। फल मक्खी की अधिकता (5 मक्खी प्रति ट्रैप) हो तो साप्ताहिक अंतराल पर पेड़ के तने पर 100 ग्राम गुड़ (राब) को 1 ली. पानी में घोलकर उसमें 2.8 ई.सी. का 2 मि.ली. डेल्टामेथ्रिन मिलाकर तने पर छिड़काव करें। मिथाइल यूजीनॉल यौन गंध ट्रैप (लकड़ी के गुटके 5×5×1 सें.मी. को मिथाइल यूजीनॉल, मैलाथियान और इथेनाल 6:4:1 के घोल में भिगोयें) प्रति हैक्टर 10 ट्रैप लगाने से कीट नियंत्रित होता है। प्रत्येक दो माह पर ट्रैप में नया गुटका लगायें। उत्तर प्रदेश के आम उत्पादक क्षेत्रों में फलबेधक कीट विगत कुछ वर्षो में समस्या बन चुका है। प्रभावित बागों में क्यूनॉलफॉस 25 ई.सी. के 1.5 मिली. प्रति ली. पानी या डाईमेथोएट 2 मि.ली. प्रति ली. पानी के घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करने चाहिए।

नया बाग लगाने के लिए गड्ढों को इस माह में खोद सकते हैं, ताकि गड्ढों में अच्छी तरह धूप लग जाए। इससे कीटों तथा बीमारियों को नियंत्रण करने में मदद मिलेगी। मई के अन्त में इन गड्ढों में आधा भाग ऊपर वाली मिट्टी तथा आधा भाग कम्पोस्ट या सड़ी हुई गोबर की खाद में क्लोरपायरीफास दवा मिलाकर पूरी तरह से भर दें। इस माह आम में फूलों की जगह पत्तों के गुच्छे बन जाते हैं। इन्हें तोड़ दें तथा 0.1 प्रतिशत मैलाथियान दवा का छिड़काव कर सकते हैं। नीबूवर्गीय पौधों में फल गिरने की समस्या होती है। इसे 2,4 डी (10 पी.पी.एम)+0.7 प्रतिशत जिंक सल्फेट के घोल से छिड़काव करने से रोका जा सकता है। लू से छोटे पौधों को बचाने के लिए इस माह में प्रत्येक पौधे के चारों ओर पुआल की छोटी चटाई, जो कि पूर्व दिशा में खुली रहती है, को लगाएं ताकि धूप और हवा मिलती रहें। यह चटाई आम, पपीता एवं लोकाट आदि पौधों पर लगाते हैं, जिनके लू से मरने का अंदेशा रहता है। गर्मी में गहरी सिंचाई करने से भी लू से बचाव होता है। लीची के पौधों में नियमित सिंचाई कर सकते हैं अन्यथा मई व जून में अचानक वर्षा होने पर या सिंचाई करने से फलों के फटने की समस्या हो जाती है। माइट के प्रकोप को कम करने के लिए डाइमिथोइट (100 ग्रा. प्रति 100 ली. पानी में) का छिड़काव करना चाहिए (मिलीबग की रोकथाम के लिए पौधों में 2 प्रतिशत क्लोरपायरीफॉस दवा डालकर गुड़ाई करने से लाभ होता है। बैक्टीरिया कैंकर की आशंका होने पर स्ट्रैप्टोसाइक्लीन (200 मि.ग्रा. प्रति ली. का छिड़काव करना चहिए। काली फफूँदी का प्रकोप होने पर घुलनशील गंधक, मोनोक्रोटोफॉस एवं गोंद (0.2, 0.05 एंव 0.3 प्रतिशत क्रमशः) का घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। छिड़काव प्रातः काल अथवा देर शाम में करना चाहिए। तुड़ाई से तीन सप्ताह पूर्व बाविस्टीन या टायसिन एन. 1.0 ग्रा. प्रति ली. का पहला छिड़काव तुड़ाई उपरान्त होने वाले रोगों की रोकथाम हेतु करना चाहिए।

## बागवानी फसलों के लाभ

बागवानी फसलें पर्यावरण को स्वच्छ रखने में मदद करती हैं। इन फसलों के क्षेत्र में वृद्धि करके वायुमंडल में ऑक्सीजन और कार्बन डाइऑक्साइड जैसी गैसों का संतुलन बनाए रखा जाता है। फलों के पौधे शहर और गाँव के अलावा गैर कृषि क्षेत्रों में लगाए जा सकते हैं। इनका रोपण जैव विविधता को भी बढ़ावा देता है। बागवानी फसलें मृदा संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मई-जून की गर्मियों में मृदा में नमी की कमी हो जाती है। इससे फल वृक्षों की बढवार कम हो जाती है एंव फल गिरने की समस्या भी आती है। इसके फलस्वरूप उत्पादन कम हो जाता है। इसके नियंत्रण हेतु मृदा में आवश्यक नमी बनाए रखना जरूरी हो जाता है। इसके लिए बागों में नियन्त्रित सिंचाई करने के साथ-साथ स्थानीय पलवार का भी उपयोग करना लाभप्रद रहता है। अतः गर्मियों में आवश्यक कृषि क्रियायें करके बागों को स्वस्थ एवं उपजाऊ रख सकते हैं। आगामी वर्षों में किसानों की आय दो गुना करने के लक्ष्य को प्राप्त करने में बागवानी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इससे न केवल किसानों की आय बढ़ेगी, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी बढेंगे।